JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पौराणिक ग्रंथों में वर्णित कृषि परंपरा : एक निर्वशीय अध्ययन

डॉ. प्रवीन जोशी

एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभाग प्रभारी इतिहास विभाग

राजकीय स्नातकोत्तर महावि।ालय कोटद्वार, गढ़वाल,उत्तराखण्ड

ज्ञमल ॅवतक : कृषि, उपकरण, भूमि, ऋग्वेद, यजुर्वेद, वैदिक, यंत्र, प्राचीनता

मानव जीवन के प्रारंभिक काल से कृषि, मुख्य आजीविका का साधन रहा है, अपने जीवन–यापन हेतु मनुष्य ने कृषि एवं पशुपालन को अन्य स्रोतों से अधिक महत्व दिया। शिकार एवं कंद मूल फलों पर जीवन यापन करने वाले पाषाण कालीन मानव ने धीरे–धीरे प्रकृति प्रदत अनाज एवं कंदमूल फलों के महत्व को समझते हुए कृषि कार्य करना प्रारंभ किया। पाषाण काल से ऐतिहासिक युग तक भारतीय जनमानस का मुख्य आर्थिक स्रोत कृषि रहा है, किंतु कृषि कार्य एवं इसमें उपयोगी यंत्र एवं विधियों का विस्तृत वर्णन प्राचीन एवं कालांतर में लिखे गए साहित्यों में बहुत कम हुआ है। प्रस्तुत शोध पत्र में कृषि कार्य एवं उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं का पौराणिक ग्रंथों में आए वर्णनों के आधार पर प्राचीनता तथा निरंतरता का नृवंशीय पहलुओं से अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

कृषि प्रधान देश भारत में कृषि का प्रचलन मानव के उद्भव से ही रहा है यहाँ कृषि करने के सर्वप्रथम साक्ष्य 4000 ईसा पूर्व कालीन नवपाषाण काल से प्राप्त होते हैं। इस काल में मानव द्वारा शिकारी एवं भ्रमणकारी दिनचर्या को छोड़कर एक ही स्थान पर समूह में रहना तथा कृषि एवं पशुपालन को अपनी आजीविका का मुख्य स्रोत बनाना शुरू कर दिया था। फलस्वरूप इस काल के मानव द्वारा शिकार में प्रयुक्त पाषाण उपकरणों के अतिरिक्त कृषि प्रधान पाषाण उपकरणों जैसे कुल्हाड़ी, बसुली, छेनी, गैती, हथौड़ी, गदाशीर्ष, कुदाल, खुरपी, हंसीयां, दराँती, आदि का भी अधिक संख्या में निर्माण किया गया (संकलिया,1964)। धातु का ज्ञान न होते हुए भी तत्कालीन मानव द्वारा कृषि कार्य करना यह सिद्ध करता है कि कृषि एवं कृषि उत्पाद मानव के जीवन यापन का प्रमुख स्रोत बन गए थे। ताम्रपाषाणिक युग में मानव को तांबा धातु का ज्ञान होने के कारण मनुष्य द्वारा व्यापक क्षेत्र में कृषि कार्य किया गया। सिंधु–सरस्वती एवं इनकी सहायक नदियों के किनारे विकसित आधएतिहासिक प्रथम नगरीय सभ्यता हड़प्पा कालीन पुरास्थलों से प्राप्त मोहरों पर अंकित विभिन्न पशुओं एवं कृषि कर्म के दृश्य, लोथल से प्राप्त तांबे का हल, हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो से प्राप्त विशाल अन्नागार, अनाज कुटने हेतु चबूतरे आदि पुरावशेष (पांडे, 2003) तत्कालीन कृषि कार्य को

प्रमाणित करते हैं। नदियों द्वारा लाई गई उपजाऊ मिट्टी के कारण इस पूरे क्षेत्र में कृषि संबंधी गतिविधियां व्यापक रूप से की गई जिसके फलस्वरूप सिंधु सभ्यता की आर्थिक स्थिति काफी मजबूत हुई और वह ग्रामीण सभ्यता से विकसित नगरीय सभ्यता में परिवर्तित हो गई (लाल,1984)।

वैदिक एवं उत्तर वैदिक कालीन कृषि कार्य, कृषि उपकरण एवं प्रकारों का वर्णन वेदों, उपनिषदों, सूत्र साहित्यों, स्मृति ग्रंथों, रामायण– महाभारत तथा अन्य ऐतिहासिक ग्रंथों में मिलता है। ऋग्वेद (5ध83ध4) में कृषि योग्य भूमि को 'इरा' एवं विष्णु पुराण (8ध98) में 'क्षेत्र' कहा गया है ऋग्वेद (विरचित,1946) एवं यजुर्वेद में भूमि को 'उर्जस्वती और पयस्वती' माना गया है ।

सूक्ष्मा चासि शिव चासि स्योना चासि
सुषदा चास्ययूजरस्वति पयस्वती च ।। (ऋग्वेद 146/6½

ऋग्वेद में उत्कृष्ट भूमि के लिए 'अरण्यानी' शब्द का प्रयोग हुआ है तथा उसे माता के रूप में माना गया है ।

आज्जम मानिंध सुरभि वृहन्नम कृषीवलाम्
प्राह मृगाण मातरमणयानि शंसिषम् ।। (ऋग्वेद,146ध6)

यजुर्वेद (18ध14) एवं (18ध7) में भी उर्वरा (उपजाऊ) भूमि को 'अरण्यानी' कहा गया है । शतपथ ब्राह्मण (1ध2ध3ध6) एवं अथर्ववेद में भी भूमि को माता के रूप में मान्यता दी गई है – माता भूमिः पुत्रों अहं पृथिव्याः (अथर्ववेद,12ध1ध22)

यजुर्वेद एवं शतपथ ब्राह्मण में कृषि शब्द का अर्थ संपूर्ण कृषि कार्य के संदर्भ में प्रयोग किया गया है – कृषिश्च मे यज्ञेन कल्पताम्, वृष्टिश्च (यजुर्वेद,18/9½ ।

पाणिनी कृत महाभाष्य (5ध1ध7) में छायादार वृक्षों से युक्त खेत को 'खल्य' एवं खेतों के समूहों को 'खल्या' कहा गया है । महाभारत में चार प्रकार की भूमि हल्य–हल से जोते जाने वाली (4ध4ध97), ऊषर –बंजर भूमि (5ध2ध10), गोचर या चारागाह (3ध3ध19) एवं व्रज या गोष्ट (5ध2ध18) का वर्णन मिलता है। पतंजलि ने भी चार प्रकार की भूमि हल्या (4ध4ध97), सौत्या– जुता हुआ खेत (4ध4ध91), अहल्य–ऊसर (5ध2ध107) एवं गोष्ट का वर्णन किया है। रामायण (32ध10), महाभारत (5ध79), पराशर स्मृति (133ध134) एवं मनुस्मृति (9ध133) में उर्वर एवं अनुवर्र दो प्रकार की भूमि का उल्लेख किया गया है ।

कृषि कार्य को प्रारंभ से आजीविका का मुख्य साधन माना गया है। महाभारत वनपर्व में सभी वर्गो के मनुष्यों की आजीविका हेतु वाणिज्य,पण्य, आकार आदि के साथ–साथ कृषि एवं गोरक्षा जीविका के प्रकार बताए गए हैं।

पण्या करवाणि ज्याभिः कृष्यागोरक्षा विपोषर्णे :

वातायां धार्यते सर्वे धर्मरतेः द्विजातिभिः ।। (वनपर्व, 66/35)

विष्णु पुराण (5ध्10ध्26), वायु पुराण (8ध्124) में कृषि, पशुपालन और वाणिज्य को आजीवन वृत्ति का महत्वपूर्ण साधन माना गया है। गौतम धर्म सूत्र (10ध्5ध्6) में कृषि एवं वाणिज्य को ब्राह्मणों के लिए आवश्यक माना गया है – कृषि वाणिज्येऽस्वयं कृते कुसीदंच ।।

महर्षि पराशर ने कृषि की महत्ता समझाते हुए ब्राह्मणों के लिए भी कृषि–वृति (कृषि वार्ता) को आवश्यक माना है, पराशर के अनुसार कृषि पद्धति ही एक ऐसी पद्धति है जो उन्हें कामधेनु के समान फल प्रदान करती है – कृषणकृषिः काम दुधा भवेत (कृषि पाराशर,192) । रामायण (100ध्48), महाभारत (66ध्35) में भी कृषि कर्म को सुख प्राप्ति का साधन माना है। मनु (7ध्4ध्3) ने लोक व्यवहार ज्ञान हेतु कृषि कार्य जनसामान्य के लिये (भट्ट,1929) तथा कौटिल्य ने कृषि विज्ञान जनसामान्य के साथ–साथ राजा के लिए भी आवश्यक माना है –

वृतोपनयनस्त्रयीम् आन्वीक्षिकीं च शिष्टेभ्यः
वार्तम् अध्क्षेम्य दण्डनीति वाक्य प्रयोक्तम्यः (अर्थशास्त्र 1/11)

इसी प्रकार पौराणिक ग्रंथों में कृषि यंत्रों का विवरण भी कृषि कार्य की प्राचीनता को प्रमाणित करता है ऋग्वेद में हल के लिए 'वृक', 'लाङलं' और 'सीर' शब्दों का प्रयोग हुआ है –

वृको लाङलं भवति विकर्तनात् (ऋग्वेद निरुक्त, नैगम कांड 6ध्25–26)

महाभारत (वनपर्व,254ध्7), अमरकोष, रामायण (6ध्1ध्14,32ध्2ध्30), विष्णुपुराण (2ध्5ध्18) आदि में भी हल के लिए सीर अथवा लाङलं शब्द का प्रयोग हुआ है। महाभारत शांतिपर्व (261ध्46) तथा मनुस्मृति (10ध्48) में हल के लिए 'काष्ठमयो मुखम' शब्द का प्रयोग किया गया है तथा हल चलाने वाले के लिए ऋग्वेद (4ध्57ध्6), अथर्ववेद (8ध्91ध्1),यजुर्वेद (4ध्8ध्9), महाभारत (2ध्32ध्13) में 'कर्षक' शब्द का प्रयोग किया गया है। यजुर्वेद (शर्मा एवं शर्मा, 1929) एवं अथर्ववेद में हलीय उपकरणों का अधिक वर्णन किया गया है अथर्ववेद में हल को खीचने के लिए 6 अथवा 8 अथवा 24 बैलों के प्रयोग संबंधी साक्ष्य प्राप्त होते हैं ।

इयं यवमष्टायोगैः षडयोगैभिरचकृषु (अथर्ववेद 6ध्91ध्1)

विष्णु पुराण (5ध्25ध्7) में हल को बलराम का प्रसिद्ध अस्त्र तथा उसके द्वारा हल से यमुना नदी की सहस्त्र टुकड़े करने का वर्णन प्राप्त होता है (विष्णु पुराण,5ध्25ध्13)। इसी प्रकार श्रीमद्भभगवतगीता (10ध्68ध्40) में बलराम द्वारा क्रोध में हल को धारण करने का उल्लेख मिलता है। पौराणिक ग्रंथों मे हल की बनावट एवं निर्माण विधियों का भी वर्णन प्राप्त होता है। कात्यान स्रोत सूत्र (2ध्6,2ध्8,2ध्11) में सीर (हल) की बनावट उसकी निर्माण विधि एवं उपयोग संबंधी विवरण प्राप्त होता है। इसी प्रकार शतपथ ब्राहमण (13ध्4ध्9) तथा अथर्ववेद (10ध्6ध्12) में हल की फाल के निर्माण हेतु खादिर (खैर) की लकड़ी प्रयोग किए जाने का उल्लेख किया गया है। कौटिल्य अर्थशास्त्र में भी मजबूत लकड़ी, लौह फाल तथा स्वस्थ बैलों द्वारा कृषि कर्म को सम्पन्न किए जाने का निर्देश दिया गया है (गैरोला, 2019)।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि कृषि कार्य मानव के प्रारम्भिक काल से ही आजीविका का मुख्य साधन रहा है। संभवतः कृषि कार्य करने वाले लोगों के कम शिक्षित होने तथा अन्य विद्वानों द्वारा इसमें रुचि न लेने के कारण प्राचीन काल में कृषि से संबंधित कोई ग्रंथ नहीं लिखा गया । अतः कृषि कार्य, प्रयोग प्रधान होने के कारण यह परंपरा ही पीड़ी डॉ पीड़ी शास्त्र का काम करती रही होगी यद्यपि पौराणिक ग्रंथों में कृषि कार्य का वर्णन अन्य प्रसंगों से कम हुआ है किन्तु इन ग्रंथों में वर्णित उपरोक्त तथ्य प्रमाणित करते हैं कि मानव सभ्यता के प्रत्येक चरण में कृषि कार्य मनुष्य के जीवन का मुख्य अंग था जिसे उसके द्वारा मुख्य आर्थिक स्रोत के रूप में प्रमुखता दी गई। समय के साथ–साथ यद्यपि कृषि कार्य एवं उसमें उपयोगी उपकरणों की तकनीक में परिवर्तन होता रहा है किन्तु वर्तमान समय में भी परंपरागत कृषि देश के विभिन भागों में अपनाई जा रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

भट्ट, के. मनुस्मृति (1929) गीता प्रेस, गोरखपुर।

गैरोला, वी. (2019) कौटिल्य का अर्थशास्त्र, चौखम्बा विधाभावन, वाराणसी।

लाल, एम. (1984) सेटलमेंट हिस्ट्री एण्ड राइज ऑफ सिविलाइजेशन इन गंगा यमुना दोआब, नई दिल्ली।

पाण्डेय, जय नारायण (2003) पुरातत्त्व विमर्श, इलाहाबाद।

पराशर स्मृति (1911) कृषि पराशर, बंबई।

संकलिया एच. डी. (1964) स्टोन ऐज टूल्स, दिएर टेक्नीक, नेम एण्ड प्रॉबबिल फँगसन, पूना।

शर्मा एल. एवं शर्मा, वी. (1929) शुक्ल यजुर्वेद संहिता, मुंबई।

विरचित, एम.(1946) ऋग्वेद संहिता, वैदिक संशोधन मंडल।